प्रदेसी राजा का व्याख्यान

स्थूल जगत में काम करने वाला सूक्ष्म सत्यों को नहीं जानता

– आचार्य महाप्रज्ञ

बीदासर, 5 मार्च, 2009।

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने तेरापंथ भवन में उपस्थित धर्म सभा को प्रदेसी राजा का व्याख्यान करते हुए कहा कि व्यक्ति इन्द्रिय चेतना के द्वारा स्थूल को जानता है किंतु उसके सामने सूक्ष्म सच्चाई सामने नहीं आ सकती। जहां सूक्ष्म सत्य है वहां तर्क भी काम नहीं करते तर्क भी स्थूल सत्यों तक काम करते हैं। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति जिज्ञासु होता है उसमें समझ भी होती है। पूरी बात को समझना कठिन होता है जब तक समझ परिपक्व नहीं होती तो सही बात को समझ नहीं सकता।

पूज्य प्रवर ने कहानी का व्याख्यान करते हुए फरमाया – ''राजा प्रदेशी राजा केसी स्वामी के सामने बैठा है, केसी स्वामी को अपने मन में ले आऊं और इनकी समझ में यह आ जाए कि आत्मा और शरीर अलग नहीं है। जो शरीर है वही आत्मा है तो हजारों लोग यह समझ जाएंगे और मेरे मत का बहुत प्रचार होगा।'' प्रदेशी बोला – महाराज! आप तो केवल सिद्धांत की बात कहते हैं और मैने प्रयोग किया है।'

पूज्य आचार्य श्री ने कहा कि 'प्रयोग सचमुच महत्त्वपूर्ण होता है। आज का वैज्ञानिक युग प्रयोग का युग है और प्रयोग चल रहे हैं और इतने प्रयोग चल रहे हैं प्रतिदिन कोई न कोई नई बात आ जाती है। सूक्ष्म जगत के रहस्य इतने हैं स्थूल जगत वाले समझ नहीं सकते। प्रयोग के द्वारा बहुत सारी बातें होती है।' प्रदेशी बोला – 'महाराज आप सिद्धांत की बात कहते हैं और मैंने बहुत प्रयोग किये यह तो मानना चाहिए उस जमाने में प्रदेशी ने प्रयोग किये इसका मतलब है कि सत्य की खोज में लगा हुआ था, अपने मत को सिद्ध करने में लगा हुआ था कि जीव और शरीर दो नहीं है। ''मैंने एक प्रयोग किया कि यानी पुलिस का अधिकारी मेरे पास एक चोर को लाये और मैंने सबके सामने मंत्री गण और दूसरे सब बड़े–बड़े लोग थे। उन सबके सामने उस चोर को एक लोह की कूंबी (लोहे का बड़ा बर्तन) में डाल दो और फिर चारों तरफ से लोहे का ढक्कन लगा दिया कि कहीं भी छिद्र न हो। महाराज मैं सफल हुआ अपने प्रयोग में कि वह चोर मर गया और एक भी छिद्र नहीं हुआ। कहते हैं कि जीव अलग है तो चोर मर गया जीव गया कहां से देखो सब ध्यान से देख लो कि कहीं भी छेद नहीं है। सबने कहा महाराज आप सही कहते हैं छिद्र तो कहीं नहीं है। महाराज मैं आपसे भी पूछना चाहता हूं और अगर आप चाहें तो जाकर देख लें अभी भी कि वह लोहे की कुंबी है, बड़ा बर्तन है ऊपर ढक्कन है कि कहीं भी छेद नहीं है वह मरा और अगर जीव अलग होता तो किसी छिद्र में से जाता या जाता तो कहीं छिद्र हो जाता। कुछ भी नहीं हुआ इसलिए आप मेरी बात को स्वीकार कर लें कि जीव और शरीर अलग नहीं है। शरीर में ही है अलग कोई जीव नहीं है। मेरे मन को आप स्वीकार कर लें। केसी स्वामी ज्ञानी थे और उन्हें पता था कि प्रदेशी राजा स्थूल इन्द्रिय चेतना से

काम कर रहा है और स्थूल जगत में काम कर रहा है यह सूक्ष्म सत्यों को नहीं जानता।''

पूज्य प्रवर ने कहा कि जब तक व्यक्ति इन्द्रिय चेतना के द्वारा ही जानता है और स्थूल सच्चाइयों को जानता है, सूक्ष्म सच्चाइयां सामने नहीं आती। जहां सूक्ष्म सत्य है वहां तर्क भी काम नहीं करते तर्क भी स्थूल सत्यों तक काम करते हैं। सूक्ष्म सत्य वहां तर्क पहुंच नहीं सकता। इसलिए भारतीय दर्शन व दूसरे दर्शनों में एक शब्द आता है 'तर्कागम्य' तर्क से भी अगम्य है। जो सूक्ष्म है वहां कोई तर्क नहीं जाता। सूक्ष्म जगत के लिए तर्क समाप्त हो जाते हैं। स्थूल जगत के तर्क अलग होते हैं और सूक्ष्म जगत में तर्क नहीं वहां साक्षात्कार होता है।

आचार्य श्री ने कहानी में कहा – 'स्थूल बात कही तो केसी स्वामी ने स्थूल उदाहरण के द्वारा समझाया। अगर वह कोई सूक्ष्म बात कहता तो वहां सूक्ष्म उदाहरण होता। किंतु स्थूल बात के लिए स्थूल उदाहरण। केसी स्वामी ने कहा प्रदेशी एक ऐसी शाला है चारों तरफ से बंद। केवल एक दरवाजा वह भी इतना सघन बंद बिल्कुल बंद कर दिया और कोई व्यक्ति उस कुतागार शाला में जाकर नगाड़ा बजाता है तो बोलो – बाहर शब्द सुनाई देता है या नहीं देता। प्रदेसी बोला – हां महाराज सुनाई देता है। क्या शब्द बाहर से भीतर आया कहीं कोई छेद हुआ। कि छेद तो नहीं हुआ कि जहां छेद नहीं हुआ भीतर का शब्द बाहर कैसे आया? प्रदेसी बोला – महाराज आपका तर्क भी ठीक है। मैं इस पर फिर विचार करूंगा, राजा बहुत समझदार था।

आचार्य प्रवर ने कहा – 'जो व्यक्ति जिज्ञासु होता है उसमें समझ भी होती है।' राजा में अपने मत का आग्रह था पकड़ थी पर साथ–साथ में समझ भी थी। बोला ठीक है आपका जो तर्क है बिल्कुल सही है और इस पर मैं विचार करूंगा। पर महाराज पूरी बात मेरे समझ में नहीं आई है। पूरी बात को समझना कठिन होता है जब तक समझ परिपक्व नहीं होती तो सही बात को समझ नहीं सकता।

राजा समझदार था, चिंतशील भी था। बड़ी विचित्र बात है कि नास्तिक खोज करने वाला, समझदार, चिंतनशील और क्रूर सारी बातों का एक योग था। एक बड़ा जटिल व्यक्तित्व था प्रदेसी राजा का। बोला महाराज – 'मेरी बात पूरी नहीं हुई मैंने और बहुत प्रयोग किये। आज का युग प्रयोग का युग है। मैंने एक ओर प्रयोग किया है तो केसी स्वामी ने कहा कि बताओ तुमने क्या प्रयोग किया?

प्रदेशी अपना क्या प्रयोग बताता है और केसी स्वामी का उस पर क्या समाधान होता है? *(क्रमशः)*

सत्य में संतोष करें : युवाचार्य श्री महाश्रमण

बीदासर, 5 मार्च, 2009।

युवाचार्य श्री महाश्रमण ने अपने प्रवचन में कहा कि कहा कि कथनी के अनुरूप करनी का होना सत्य है, ऋजुता है। व्यक्ति सत्य को यथार्थ के संदर्भ में समझने का

और उसे व्याख्यात करने का प्रयास करें। सत्य बोले बिना काम चलना भी मुश्किल है। अनुभव कर लें झूठ बोलने वाला वह भी अनुभव कर ले कि आम तोर से वह दिन रात में सत्य ज्यादा बोलता है और झूठ कम बोलता है। व्यक्ति झूठ वहां बोलता है जहां उसे लगे कि संकट आने वाला है, तब आदमी झूठ का सहारा लेता है। विस्मृति से कभी कोई झूठ गलत बात निकल जाए आमतौर से आदमी झूठ नहीं बोलता। व्यवहारिक दुनिया में सत्य बोलने का परिणाम आता है। कभी कोई व्यक्ति झूठ बोलकर पैसा कमा ले, झूठ का पैसा कमाना कौनसी बड़ी बात हैं सच्चाई का पांच पैसा कमाना महत्त्वपूर्ण बात है। झूठ, धोखाधड़ी से पैसा कमा लिया तो पैसा साथ में जाने वाला नहीं है।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि साधु के लिए सत्य की साधना आसान है। अपेक्षाकृत गृहस्थ के लिए सत्य की साधना कठिन होती है। आदमी का लक्ष्य बन जाए और संकल्प मजबूत हो जाए काफी अंशो में साधना की जा सकती है। जो आदमी सत्य युक्त वचन बोलता है उसके लिए आग भी उसके सामने जल हो जाती है, समुद्र स्थल बन जाता है, शत्रु मित्र बन जाता है। जंगल नगर बन जाता है, पहाड़ घर बन जाता है, विष अमृत बन जाता है। सत्य का अपना महत्त्व है इसमें कोई शंका की बात नहीं है। सत्य की ही विजय होती है झूठ की नहीं।

युवाचार्य महाश्रमण ने कहा कि सत्य में धृति करो, सत्य में संतोष करो। झूठ के प्रलोभनों में मत आओ यथा संभव, यथा शक्ति आदमी को मजबूत मनोबल बनाकर के सत्य की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

– अशोक सियोल

9982903770